शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बदलते संदर्भों में समकालीन कविता : नये निकष एवं नये मानक

अरशदा रिज़वी (शोधार्थी)
हिंदी विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

कविता समाज के लिए समयानुरूप समस्त स्थितियों के दर्शन कराती आई है, जिससे मनुष्य उन परिस्थितियों के अनुरुप स्वयं को ढालकर सामाजिक सामंजस्य स्थापित करता है। प्राचीन काल में समाज को जिस प्रकार के काव्य की आवश्यकता थी, उसका चित्रण तत्कालीन कविता के माध्यम से हुआ। मध्यकालीन कविता ने भी अपना कर्त्तव्य बख़ूबी निभाया और आधुनिक काल तक इसका प्रयास निरंतर जारी है। समकालीन कविता ने भी समाज को उन स्थितियों के प्रति आगाह करने का प्रयास किया, जिसकी आवश्यकता आज समाज को है। प्राचीन कविता में जहाँ यश, अर्थ, आनन्द तथा मंगल कविता के लक्ष्य बताए जाते रहे हैं, वहीं समकालीन जगत में व्याप्त दुःख चारों ओर फैली आग, बाज़ारवाद के शिकंजे में गिरफ़्त और उसमें छटपटाता इंसान कविता के दायरे में आता है। आज की कविता प्रदूषित वातावरण से त्रस्त विश्व की स्थिति, विज्ञापनों का मकड़जाल, हाशिए पर धकेल दिए गए लोगों की भावाभिव्यक्ति, अन्याय, आतंकवाद, राजनीतिज्ञों की भ्रष्ट करतूतों को अनावृत करती तथा समाज की अनकही बातों पर चुप्पी तोड़ती दिखाई देती है। इन सभी विषयों का उद्घाटन समकालीन कविता का प्रमुख स्वर है। इसके साथ ही प्राचीन कविता से समकालीन कविता का अर्थ और प्रयोजन किस प्रकार बदल रहा है, उस पर दृष्टि रखना भी वर्तमान समय की आवश्यकता है। समकालीन कविता के बदलते निकष और मानकों का अध्ययन कर इस कविता की आवाज़ को बख़ूबी समझा जा सकता है।

बीज शब्द : *भारतीय-पाश्चात्य काव्यशास्त्र, प्रयोजन, भावाभिव्यक्ति, समकालीन, अनुभूतियाँ*

भूमिका

कला को रेखा, रुप, आकृति, रंग, ताल तथा शब्द के रूप में मानव की आंतरिक प्रवृत्तियों की बाह्य अभिव्यक्ति माना जाता है। मानव इन कलाओं के माध्यम से अपने मन की अंतरतम भावनाओं का प्रकटीकरण कर समाज में नित नए आह्लादकारी रंगों का समायोजन करता रहता है। काव्य भी नृत्य कला, मूर्तिकला, संगीतकला और चित्रकला की भाँति एक कला है। काव्य मानवानुभूतियों को जगत के समक्ष उद्भासित करता है। काव्य जगत के लिए दर्पण के समान है, क्योंकि काव्य जगत में समयानुसार व्याप्त समस्त अच्छाई-बुराई, सत्य-असत्य, विचारों और भावनाओं को दर्पण के समान प्रकट कर जनसमूह का इसके प्रति ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास करता है। डॉ.भगीरथ मिश्र 'काव्यव्यशास्त्र' नामक पुस्तक में काव्य के विषय में लिखते हैं, "काव्य निराकार पदार्थों भावों और विचारों को साकार और सजीव बनाता है। रूप और व्यक्तित्व के प्रभाव की विद्युत ज्योति को संजोकर सुरक्षित रखना और उससे अनुभूतियों और चेतनाओं के प्रदीप आलोक्ति कर देना काव्य की ही सामर्थ्य है। वास्तविक बात

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तो यह है कि शास्त्र और विज्ञान तो जीवन का सार या निचोड़ देते हैं पर जीवन के यथार्थ रूप की धारा को अक्षुण्ण और पूर्णरूप से प्रभावित करते रहना काव्य का ही कार्य है।"[1]

कविता की आवश्यकता : भारतीय और पाश्चात्य दृष्टि

कविता क्या है ? कविता किस प्रकार लिखी जानी चाहिए ? कविता में किन भावों की अभिव्यक्ति होनी आवश्यक है ? कविता के लिए किस प्रकार की भाषा आवश्यक है ? इन विषयों पर प्राचीन काल से ही विद्वानों ने भिन्न-भिन्न मंतव्य दिए हैं। संसार में नितप्रति होते परिवर्तनों के साथ-साथ ही कविता के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला आया है, इसलिए कविता के विषय में विचार करना आवश्यक हो जाता है। प्राचीन समय में विद्वानों ने कविता को अलग प्रकार से देखा उनका नजरिया तत्कालीन स्थितियों के अनुरूप था, परंतु आज समय बदल रहा है, इसीलिए नए मानदंडो की आवश्यकता आन पड़ती है। समकालीन कविता किस प्रकार के विचारों, भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति कर रही है तथा समय सापेक्ष बदलावों ने कविता को किस प्रकार प्रभावित किया है, उन पर विचार करना आवश्यक हो गया है। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण में 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'[2] कहकर रसात्मक वाक्य को ही काव्य की संज्ञा दी है। पण्डितराज जगन्नाथ ने 'रमणीय अर्थ के प्रतिपादन करनेवाले शब्दों को काव्य' कहा है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कविता क्या होती है, इस पर विचार करते हुए कहा है कि "कविता प्रभावशाली रचना है जो पाठक या श्रोता के मन पर आनंदमयी प्रभाव डालती है।"[3] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कविता को हृदय की मुक्तावस्था की संज्ञा दी है। जयशंकर प्रसाद ने कविता को 'आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति' कहा है।

काव्य का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वानों ने अनेक मत दिए हैं। आचार्य मम्मट ने काव्य प्रयोजन के बारे में कहा है :

"काव्यम यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिवृत्तये कांता सम्मितयोपदेशयुजे।"[4]

पाश्चात्य विद्वानों में कॉलरिज ने 'सर्वोत्तम शब्दों के सर्वोत्तम क्रम को कविता' कहते हुए काव्य को परिभाषित करने का प्रयत्न किया। वर्डस्वर्थ ने 'कविता को प्रबल मनोवृत्तियों का सहज उद्रेक बताते हुए उसकी उत्पत्ति शांति के क्षणों में स्मृत मन के उद्गारों द्वारा मानी है। इन सभी भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों ने कविता को अपने युगानुरूप समझाने का प्रयत्न किया।

मम्मट ने बताया कि काव्य से यश की प्राप्ति, अर्थ की प्राप्ति, व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा अमंगल का नाश होता है, लोकातीत आनन्द की प्राप्ति होती है, कान्ता के समान प्रिय लगने वाले उपदेश को भी काव्य का प्रयोजन बताया है। पाश्चात्य विचारकों में प्लेटो ने लोकमंगल को तथा होमर, अरस्तू, जॉन ड्राइडन और कालरिज ने आनन्द को प्रमुख काव्य प्रयोजन माना है। गोस्वामी तुलसीदास ने 'स्वांतः सुखाय' को काव्य का प्रयोजन माना है। मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं :

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।"[5]

मैथिलीशरण गुप्त ने 'सिद्ध कविता कामिनी को आनन्ददात्री शिक्षिका' बताते हुए मनोरंजन को गौण रूप में तथा उपदेश को मुख्य रूप में काव्य का प्रयोजन बताया है। प्राचीन काल से अब तक भिन्न-भिन्न लेखकों, कवियों, आलाचकों ने काव्य कैसा होना चाहिए ? उसमें किन तत्वों का समाहार होना आवश्यक है ? काव्य किस प्रकार जगत का दर्पण कहा जाता है ? की अभिव्यक्ति अपने विचारों द्वारा स्पष्ट की है। इसी भाँति समकालीन कवि कविता को किस प्रकार देखते, समझते और अभिव्यक्त करते हैं आदि प्रश्नों पर भी विचार करना आवश्यक हो जाता है। समकालीन कविता के लक्षण क्या है ? समकालीन कविता किस प्रकार के उद्देश्यों को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाती है ? क्या समकालीन कविता में काव्य के प्रतिमान बदलते हुए दिखाई देते हैं ? क्या समकालीन कविता पर कुछ नए विचार प्रभाव डालते हुए काव्य के नए मानदंडो को साहित्य जगत के समक्ष लाने का प्रयास करते दिखायी देते हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए समकालीन कविता की तह तक पहुँचना आवश्यक है।

समकालीन कविता : नव निकष और नव सन्दर्भ

समकालीन का अर्थ है 'अपने समय का या समसामयिक।' समकालीन कविता से अभिप्राय ऐसे काव्य से है जो समसामयिक हो अर्थात अपने समय की आवाज़ हो। इसे साठोत्तरी कविता भी कहते हैं। 'समकालीन कविता का बीजगणित' नामक पुस्तक में कुमार कृष्ण कहते हैं कि "समकालीन कविता या साठोत्तरी कविता बदलते हुए मूड की कविता है जिसका पूरा स्ट्रक्चर कथ्य के अनुकूल है।"[6] समकालीन कविता की कुछ समय सीमा निर्धारित नहीं है। कुछ विद्वानों ने इसे नई कविता का ही एक आंदोलन माना है जो सन् साठ के बाद उभरा। "साठोत्तरी कविता समाज की मृत मान्यताओं, टूटती हुई परम्पराओं और सामाजिक, राजनीतिक भ्रष्टाचार से क्षुब्ध युवा मानस की अभिव्यक्ति है। उसे आज की बिखरी हुई दोहरी जिंदगी और बदलते मानवीय संबंधों की अभिव्यक्ति कहा जाता है।"[7] यूँ तो समकालीन कविता समसामयिक समस्त घटनाक्रम, परिस्थितियों, उदासी, बेचैनी, मानसिक असंतोष तथा जीवन के हर एक पहलू को अभिव्यक्ति देती नज़र आती है, परंतु समकालीन कविता, कविता को किस प्रकार देखती है ? उसमें किन गुणों का होना आवश्यक समझती है ? यह भी विचारणीय है। कुछ आलोचक समकालीन हिन्दी कविता को अपने समय के अन्तर्विरोधों और द्वन्द्वों की कविता कहते हैं, कुछ आज की कविता कहते हैं तथा कुछ राजनीतिक कविता स्वीकार करते हैं। इस विषय में समकालीन कवियों ने अपनी कविताओं में जो मन्तव्य स्पष्ट किया है, उसे जानना अत्यावश्यक है।

लीलाधर मंडलोई 'लिखे में दुक्ख' नामक कविता में कविता के उस रुप को महत्व देते हैं जिसमें समस्त जगत का दुख अभिव्यक्त होता हो। वे कहते हैं, "मेरे लिखे में अगर दुक्ख है और सबका नहीं, मेरे लिखे को आग लगे।"[8] एक ओर तो मंडलोई सर्वजन के दुख को शामिल करते हुए कविता की बात करते हैं वहीं दूसरी ओर कविता में ऐसी आग की बात करते हैं जो चारों तरफ फैल जाए। 'मेरी मेज़ पर/ टकराते हैं/ शब्द से शब्द/ एक चिंगारी उठती है/ और कविता में आग की तरह फेल जाती है/ आग नहीं तो कविता नहीं।"[9] दिनेश कुमार शुक्ल की कविता 'अंतरतम के अनछुए पहलुओं' में अपनी जगह बनाती दिखाई देती है। कविता सभी प्रकार के तिलिस्म के सभी वज्र कपाट तोड़ती है। 'कभी तो खुले कपाट' नामक कविता में कहते हैं :

"इसीलिए आती है कविता

भीतर पैठे / उन जगहों को छुए
जहां तक / नहीं पहुंच पाती हैं डालें
नहीं पहुंच पाता प्रकाश / या पवन झकोरा
संदेशों के पंछी भी / पर मार न पाते
जिन जगहों पर....
लोहे के हों, / या तिलिस्म के
सारे वज्र तोड़ती-कपाट / इसीलिए
धारा जैसी आती है कविता / प्रबल वेग से।"[10]

राजकुमार कुम्भज ने कविता को स्नेहमयी क्रीड़ा बताया है, जो जीवन के सारे पहलुओं, भावनाओं को उजागर करती है तथा कवि इस स्नेहमयी क्रीड़ा में क्रीड़ा करते-करते मर जाना भी उचित समझता है। 'कविता एक स्नेहिल क्रीड़ा है / जिसमें अपार दुख है / प्रेम है, प्रेम की पीड़ा है / इस क्रीड़ा में / क्रीड़ा / करते-करते मर जाऊगाँ मैं भी तो / फ़र्क नहीं कुछ।"[11] समसामयिक बुरे हालात को देखते हुए मदन कश्यप परेशान दिखाई देते हैं। बाज़ारवाद, प्रदूषित वातावरण तथा विज्ञापनों के इस युग में जहाँ उत्पाद से अधिक प्रचारिकाओं का महत्व है, ऐसे समय में कविता कैसे लिखी जाए तथा वह किन भावों की अभिव्यक्ति करे, इसे लेकर 'बुरे वक़्त में कविता' नामक कविता में मदन कश्यप कहते हैं :

"ऐसे बुरे वक्त / कैसे लिखी जाए कोई कविता
जब फूलों को देखकर कहना मुश्किल हो
वह फूल ही है / पहाड़ पर चढ़ो
तो वह बालू के ढूह की तरह भहराने लगे
नदी का पानी इतना विषैला हो / कि डुबकी लगाते ही छाल उतर जाए
चाकलेट में मिठास की जगह विज्ञापनों का शोर भरा हो
साबुन में खुशबू के बदले / प्रचारिका की अदाएं हों
यानी कोई भी चीज वह न हो / जो उसे होना चाहिए
झूठ के नक्कारे पर बजते-बजते / शब्द जब हो चुके हो गरिमाहीन
जब घटित हो जाएं एक साथ / इतनी अनचाही घटनाएं
ऐसे बुरे वक्त में / कैसे लिखी जाए कोई कविता!"[12]

प्राचीन काव्यशास्त्रियों ने शब्द, अर्थ, गुण, अलंकार, रस, छन्द सभी का समुचित सामंजस्य काव्य के लिए आवश्यक माना है। उसी प्रकार 'बचे हुए शब्द कविता में मदन कश्यप लिखते हैं कि कविता तिकड़म से नहीं लिखी जाती है :

"जितने शब्द आ पाते हैं कविता में
उससे ज़्यादा कहीं छूट जाते हैं
बचे हुए शब्द छपछप करते रहते हैं
मेरी आत्मा के निकट बह रहे पनसौते में...
मैं इन्हें फाँसने की कोशिश करता हूँ

तो मुस्कुराकर कहते हैं
तिकड़म से नहीं लिखी जाती कविता
और मुझपर छीटें उछालकर
चले जाते हैं दूर गहरे जल में
मैं जानता हूँ इन बचे हुए शब्दों में ही
बची रहेगी कविता।"[13]

'समकालीन कविता का बीजगणित' में कुमार कृष्ण लिखते हैं, "साठोत्तरी कविता मुख्यतः साधारण आदमी की पहचान की और उस पहचान की तलाश की कविता है। इसलिए वह अज्ञेय आदि कवियों की आत्मनिष्ठा और आत्म तल्लीनता की बजाय मुक्तिबोध की विकलता और प्रतिबद्धता को अपने अधिक निकट पाती है।... साठोत्तरी कविता सही माने में जनतंत्र की कविता है। जिसमें जनगण के सुख ही नहीं आदमी की नियति के प्रति भी एक सीधा सरोकार है।"[14] चन्द्रकान्त देवताले 'मैं कौन ख़ास' नामक कविता में ऐसी कविता की बात करते हैं, जो साधारण हो तथा साधारण लोगों के लिए हो। वे कहते हैं, "यदि मेरी कविता साधारण है / तो साधारण लोगों के लिए भी / इसमें बुरा क्या मैं कौन ख़ास।"[15] कविता इस दृश्य जगत की अभिव्यक्ति मानी जाती है। इसलिए नंदकिशोर आचार्य को कविता में सारी दुनिया सिमटती नज़र आती है। वह कहते हैं :

"फूल आकाश का खिलना है
या उसका सिमट आना
यह उस कविता से पूछो
शब्द में खिल उठती है जो
जिसमें / सारी दुनिया सिमट आती है।"[16]

'भीजै दास कबीर' नामक काव्यसंग्रह में लीलाधर मंडलोई 'मैं कवि नहीं' नामक कविता में मातृभूमि के प्रति अपने भावावेगों को प्रकट करते हुए कहते हैं "अगर कविता में न आए / मेरी मातृभूमि / मैं कवि नहीं।"[17] भारतेन्दु और द्विवेदी युग की कविता में राष्ट्रीयता एक प्रमुख उद्देश्य था, परंतु समकालीन कविता में भी कवि ने राष्ट्रीयता को कविता का केवल श्रेयस्कर उद्देश्य माना है। 'कविता को सम्बोधित!' नामक कविता में भारत यायावर ने कविता को विचार एवं दर्शन को रूपायित करने वाली भाषा की जड़ में बसने वाली, हर खोज एवं शोध का कारण बताया है। वे कविता को सभ्यता की कोमल भावनाओं का सृजन करने वाली बताते हुए कहते हैं:

"भाषा की जड़ों में तुम हो
हर विचार दर्शन रूपायित तुमसे
हर खोज, हर शोध की वजह तुम हो
सभ्यता की कोमलतम भावनाएँ तुमसे
कुम्हार ने तुमसे सीखा सिरजना / मूर्तिकार की तुम प्रेरणा
चित्रकार के चित्रों में तुम हो / हर दुआ, दुलार तुमसे
नर्तकी का नर्तन तुम हो / संगतकार का वादन रचना का उत्कर्ष तुम हो"[18]

दिनेश कुमार शुक्ल के काव्यसंग्रह 'कभी तो खुले कपाट' की भूमिका में नामवर सिंह जी कहते हैं, "कहना न होगा कि स्मृतिभ्रंश और स्मृतिहीनता के इस दौर में धरती माता को जगाना एक अनुष्ठान मात्र नहीं बल्कि आत्मबोधन और स्मृति का पुनर्वास है।"[19] कवि उपेन्द्र कुमार 'अव्यक्त की विकलता' नामक कविता में कविता का प्रादुर्भाव एक ओर प्रकृति में समाहित आह्लाद से मानते हैं वहीं दूसरी ओर मानते हैं कि कविता के लिए क़लम जब उठती है, जब कवि थका हारा हो। वे कहते हैं :

"जब भी मैं
चलता हूँ
पर्वतों और बादलों के संग
होता हुआ आह्लादित
तो मेरे भीतर कहीं
साथ-साथ लगती है चलने
एक कविता"[20]

'लकड़बग्घा हंस रहा है' काव्य संग्रह की 'भाषा के इस भददे नाटक में' कविता में चन्द्रकान्त देवताले सत्य को कविता का प्रमुख प्रयोजन स्वीकृत करते हैं, "सत्य को जब चीथता है कोई शब्द / या कोई शब्द ध्वस्त हो / देता है हमें सत्य / तब टपकता है दूध कविता का / मज़बूत होती है घास की जड़ें।"[21] भाषा में शब्दार्थ का उचित समायोजन प्राचीन समय से ही कविता की मुख्य आवश्यकता रहा है। सभी प्रमुख काव्यशास्त्री गुण सहित तथा दोषरहित भाषा में काव्य रचना आवश्यक समझते हैं। नन्दकिशोर आचार्य भाषा की आवश्यकता एवं महत्ता स्थापित करते हुए 'तुम लिखती हो' नामक कविता में कहते हैं, 'रास्ता यही रहा केवल / कवि लिखे नहीं / कविता / खुद ही हो जाए / जिसे तुम लिखती हो भाषा।"[22] पद्मजा शर्मा कविता पर विचार करते हुए 'अपनी बात' कविता में कहती हैं कि कविता विचार या भाव मात्र नहीं होती है बल्कि कथा, संस्मरण तथा अपने समय के इतिहास सदृश होती है। समकालीन कविता उन सभी को केन्द्र में लाकर खड़ा करती है जो हाशिए पर ढकेल दिए गए थे। पहले से आज में क्या बदलाव आया है ? या नहीं उस को विचारते हुए वे लिखती हैं :

"कविता विचार नहीं होती / पर बिना विचार होती है क्या कविता
कविता भाव नहीं होती / पर भावहीन होती है क्या कविता
बहुत कुछ होता है कविता में..
कविता सिर्फ कविता नहीं होती / थोड़ी-सी कथा, संस्मरण
और अपने समय का इतिहास भी होती है कविता...
नाम, चेहरे और युग बदलने से ही / हालात नहीं बदल जाते
जिन आँखों में नमी आज है उनमें कल भी थी
जिन चेहरों पर हँसी कल न थी / आज भी कहाँ है ?
जो कल हाशिये पर थे / आज भी हैं
कविता चाहती है उदास चेहरों पर हँसी / आज भी, कल भी।"[23]

एक अन्य कविता 'तो मैं लिखूँ कविता' में कविता किस कारण से लिखी जाए इस पर विचार करती हुई पद्मजा शर्मा लिखती हैं, "उसकी रोटी का थोड़ा सहारा हो जाए / खुशहाल सर्वहारा हो जाए / नदी के साथ जैसे किनारा हो जाए / तो मैं लिखूँ कविता / मेरा भारत हमारा हो जाए / समृद्ध सब जग से न्यारा हो जाए / हम सबका प्यारा दुलारा हो जाए / तो मैं लिखूँ कविता / सत्ता जनता के लिए / और जनता में भाईचारा हो जाए / मनुष्य के दुखों का निस्तार हो जाए / जीवन में अभय का इशारा हो जाए / तो मैं लिखूँ कविता।"[24]

रंजना जायसवाल 'चलो कविता' में एक ऐसे समाज के लिए कविता लिखने की बात करती हैं जो चौराहों पर अलग-अलग काम कर अपना जीवन-निर्वाह कर रहे हैं। ऐसे लोग जिनकी झुग्गी-झोपड़ी भी शहर की चकाचौंध के लिए उजाड़ दी जाती है। वे लिखती हैं "रिक्शे वाले / ठेले लगाए खड़े होते हैं / गरीब / जिनकी झुग्गियाँ / शहर की सुंदरता के लिए / उजाड़ दी जाती हैं / चलो कविता / तुम्हारी जगह / उन्हीं लोगों के बीच है।"[25]

एकान्त श्रीवास्तव 'बीज से फूल तक' काव्य संग्रह में दर्ज 'मृत्युदंड' कविता में कहते हैं कि उनकी कविता दुखों की खान है, जहां पर दर्द अपाठ्य लिपियों में विद्यमान है। दुख की कविता होने के बावजूद भी कवि अगले जन्म में फिर से कविता से रूबरू होना चाहता है। कवि कहता है, "मेरी कविता दुखों की खान है / वहाँ दर्द की लिपियाँ हैं अपाठ्य / फिर भी अगर पुनः आऊं धरती पर / फिर लूँ जन्म / तुम फिर मुझे मिलना / ओ मेरी कविता / तुम फिर होना / ओ मेरे मन!"[26] समकालीन समय की परिस्थितियों पर दृष्टि रखते हुए मदन कश्यप व्यंग्य करते हुएकहते हैं कि समाज जिन बातों पर चुप्पी साध रहा है उन पर कविता क्यों की जाए। वे 'इन चुप्पियों का क्या करें' कविता में कहते हैं :

"अर्थ निचड़े शब्दों के इस युग में यह बहुत आसान है
कि हम इन चुप्पियों पर एकदम चुप्पी साध लें
फिर ख़ूब चीखें-चिल्लाएँ, कविताएं लिखें, इनसे मुँह मोड़कर
हजारों विषय पड़े हैं कविता के लिए
इन चुप्पियों पर क्यों की जाए इतनी मगज़मारी।
महज़ कविता करने के लिए कोई क्यों झेले इतना तनाव
अब जबकि पदों पुरस्कारों के लिए लिखी जाती है कविता
यह चुप्पा समाज भला क्या देगा किसी कवि को
उसके पास तो बस चाहत होती है ऐसी कविताओं की
जो उसकी चुप्पियों का रहस्य खोल दे!"[27]

मोहन राणा कविता पर कुछ अलग राय देते हुए उसे विभिन्न कारणों से लिखने के बारे में सोचते हैं : "अधनींद में सोचने लगा कविता के बारे में / शीर्षक उसका होगा संतुष्ट / यह सहमति असहमति के बारे में / होगी यह मोलभाव नापतोल के बारे में होगी / यह मीठी चाय की आदत पर होगी / संग्रह छप जाने की खुशी में लिखूंगा इसे / यह मचान बनाने वाले पर होगी / यह बारिश के बारे में होगी जो नहीं करती चकित / यह सांस की तटस्थता के बारे में होगी कविता।"[28] शैलजा सक्सेना अपनी एक कविता 'आज की कविता' में समाज में व्याप्त कुरीतियों को, अन्याय को. आतंकवाद को, राजनीतिज्ञों की भ्रष्ट करतूतों को

देखकर तमतमा जाती हैं तथा अपनी कलम की धार से इन पर व्यंग्य करती हुई कविता में इन बुराइयों पर लिखना आवश्यक मानती हैं :

मेरी कविता के पेट से
स्खलित हो जाता है भविष्य का सपना
जब हम आतंकवादियों के बमों को,
राजनीतिज्ञों की भ्रष्ट करतूत को,
न्यायालय के अन्याय को,
नीतियों की कुरीतियों को,
मान कर अपने जीवन का हिस्सा
बेबसी से देखते हैं कि
किया ही क्या जा सकता है ?
तब तमतमा उठती है मेरी कविता!"[29]

समकालीन कविता पुराने निकषों को बदलकर नव प्रतिमानों और मानकों को गढ़ती है। समकालीन कवि इस समय काल के स्वरूप का चिंतन कर उन्हें ही अपनी कविताओं में आवाज़ देते हैं।

निष्कर्ष

सभी समकालीन कवियों ने कविता का प्रयोजन समाज के हित को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग बताया है। कोई दुख को, कोई आह्लाद को, कोई संत्रास को, कोई प्रेम को, कोई स्नेहमयी क्रीड़ा को और कोई सत्य को काव्य का उद्देश्य बताते है। हर किसी की निगाह में कविता के मायने अलग हैं। समकालीन कवियों ने जनजीवन की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति को कविता का उद्देश्य माना है, जिसमें समाज का पूर्ण चित्र उभरकर सामने आता है। प्राचीन काव्यशास्त्रियों के समान ये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, यश, आनंद और रस को ही कविता का उद्देश्य मात्र नहीं मानते अपितु समाज की सच्चाई को जनजीवन के समक्ष लाकर आग के रूप में चारों और फैला देना चाहते हैं। ये कविता में ऐसी आग की बात करते हैं जो समाज में व्याप्त समस्त दुःख-दर्द, ऊब, संत्रास, पीड़ा और बुराइयों को दूर कर उन्हें ख़ाक कर दे, जिससे सभी को उनके हिस्से की खुशियां मिल सकें। अतः कहा जा सकता है समकालीन कविता जागरणकर्त्ता के समान कार्य कर रही है जो अपने समाज की आवाज़ को मुखर अभिव्यक्ति देती हुई नज़र आती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 मिश्र, भगीरथ, काव्यशास्त्र, 1972, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृष्ठ 2
2 विश्वनाथ कविराज, साहित्य दर्पण, कालिका तयंत्रे मुद्रित 1900
3 मिश्र, भगीरथ, काव्यशास्त्र, 1972, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृष्ठ 14
4 मिश्र, भगीरथ, काव्यशास्त्र, 1972, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृष्ठ 29
5 गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, 1984, साहित्य सदन प्रकाशन, दूसरा संस्करण पृष्ठ 171
6 कुमार कृष्ण, समकालीन कविता का बीजगणित, वाणी प्रकाशन, 2004 पृष्ठ 10
7 कुमार कृष्ण, समकालीन कविता का बीजगणित, 2004, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 12

8 मंडलोई, लीलाधर, लिखे में दुःख 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ 92
9 मंडलोई, लीलाधर, लिखे में दुःख 2010, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृष्ठ 107
10 शुक्ल, दिनेश कुमार, कभी तो खुले कपाट 2001, अनामिका प्रकाशन, पृष्ठ 22
11 कुम्भज राजकुमार, कविता एक स्नेहिल क्रीड़ा है, http://kavitakosh.org/
12 कश्यप, मदन, नीम रोशनी में, 2020, सेतु प्रकाशन, पृष्ठ 74
13 कश्यप, मदन, नीम रोशनी में, 2020, सेतु प्रकाशन, पृष्ठ 48
14 कुमार कृष्ण, समकालीन कविता का बीजगणित, 2004, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 12
15 देवताले, चन्द्रकान्त, आग हर चीज़ में बतायी गयी है, 2007, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 2
16 आचार्य, नंदकिशोर, कविता से पूछो, http://kavitakosh.org
17 मंडलोई, लीलाधर, भीजै दास कबीर, 2016, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 11
18 यायावर, भारत, कविता को सम्बोधित! http://kavitakosh.org/
19 शुक्ल, दिनेश कुमार, कभी तो खुले कपाट 2001, अनामिका प्रकाशन, पृष्ठ 9
20 कुमार, उपेन्द्र, अव्यक्त की विकलता, http://kavitakosh.org/
21 देवताले, चन्द्रकान्त, भाषा के इस भद्दे नाटक में http://kavitakosh.org/
22 आचार्य, नंदकिशोर, तुम लिखती हो, http://kavitakosh.org/
23 शर्मा, पद्मजा, अपनी बात, ज़िन्दगी को मैंने थामा बहुत बहुत http://kavitakosh.org/
24 शर्मा, पद्मजा, तो मैं लिखूं कविता, ज़िन्दगी को मैंने थामा बहुत http://kavitakosh.org/
25 जायसवाल, रंजना, चलो कविता, ज़िन्दगी के काग़ज़ पर, http://kavitakosh.org/
26 श्रीवास्तव, एकांत, बीज से फूल तक, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 16
27 कश्यप, मदन, कवि ने कहा, 2008, किताबघर प्रकाशन, पृष्ठ 20
28 राणा, मोहन, सुबह की डाक 2002, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 25
29 सक्सेना, शैलजा, आज की कविता, http://kavitakosh.org/

सहायक ग्रंथ

1 मिश्र, भगीरथ, काव्यशास्त्र, 1972, विश्वविद्यालय प्रकाशन
2 गुप्त, मैथिलीशरण, भारत-भारती, 1984, दूसरा संस्करण साहित्य सदन प्रकाशन